निराला के स्वगत

 —जगदीश गुप्त

कवि स्वभावतः अपने अंतरग जीवन में विशेष संवेदनशील एवं सक्रिय रहता है, पर निराला जी इस विशेष से भी कुछ अधिक विशेष थे| वे रचना के क्षणों में ही आत्मकेंद्रित नहीं होते थे, इतर समय में भी बहुधा वैसे ही अंतर्लीन दिखाई देते थे| अपने अंतिम दिनों में वे और भी आत्ममुखर हो गये थे, जिस वातावरण में वे थे, उसमें उनके मुखर स्वर प्रायः गूँजते थे| दारागंज की गलियों ने उन्हें सुना है, कमलाशंकर के घर की दीवारों के कान उनसे अच्छी तरह परिचित रहे हैं| आते-जाते लोग भी उनकी गूँज और अनुगूँज का अनुभव कर लेते थे|

 निराला का वह स्वगत संभाषणक्रम अकेले में तो प्रायः चलता ही रहता था,पर लोगों की उपस्थिति में वे इससे विरत हो जाते हों,ऐसा भी नहीं था| जो कुछ वे अपने से कहते रहते थे, वह सर्वथा निरर्थक या पागल का प्रलाप मात्र हो यह कहना मेरे लिये संभव नहीं है, क्योंकि मैंने कई बार उनके स्वगतों में गहरी किंतु अस्फुट अर्थपूर्णता का अनुभव किया|

 उनके शब्द कभी उबलते हुए पानी की तरह, कभी बहती हुई तेज धारा की तरह और कभी ज्वालामुखी से रिसते हुए लावे की तरह प्रतीत होते थे| संगति-असंगति का विचार करके उन्हें उच्चरित किया जाता हो,ऐसा नहीं लगता था| कोई व्यवस्था, कोई क्रम भी उनमें नहीं झलकता था,पर वे सर्वथा असंगत या निरर्थक भी नहीं जान पड़ते थे; परंतु एक उन्मेष, एक प्रखरत, एक आत्मबोध की प्रवृत्ति और कभी-कभी जिसे कविता में भी नहीं कहा जा सकता, उसे कहा जाने की उत्कट इच्छा उनमें झलकती थी| किसी अवांछित स्थिति की प्रतिक्रिया, किसी पूर्व प्रसंग का संदर्भ, किसी क्षति की पूर्ति का प्रयास, अहंभाव पर ठेस देने वाले अनुभव के विरुद्ध रह-रह कर जागरुक होने वाला स्वाभिमान,अपने को छिपाने या कुछ अन्य बताने की चेष्टा, मन के भीतर साक्ष्य में बाधक बाहरी व्यक्ति या स्थिति के प्रति तीव्र उपेक्षा-भाव, आशंका या कल्पित भय और कुछ जीवनव्यापी विसंगतियों, जटिलताओं तथा असहनीय वेदनाओं की मिली-जुली अभिव्यक्ति भी उनमें रहती थी| उच्चारण में मुक्त छंद का-सा प्रवाह और चिंतनशीलता की मुद्रा, फड़कते हुए होंठ, अधखुली आँखों, थहाराते हुए अंग, उलझे खुले केश या कभी घुटी हुई चाँद, माथे पर पड़ती त्योरियाँ, ऊँची-नीची होती हुई भौंहें, लहराता हुआ अधोवस्त्र यह सब भी उनके स्वगतों के साथ लगा रहा है, जिसे भूल पाना मेरे लिए संभव नहीं|

 जिन दिनों मैं ‘मोती महल’ में रहता था और उनके यहाँ प्रायः आता जाता था, मैंने कई बार सोचा कि उनके स्वगतों को लिखता चलूँ, पर उनका स्मरण रख पाना और घर आकर तद्वत लिख देना दैनंदिन व्यापारों में कहाँ सम्भव हो पाता है| फिर भी दो-एक बार के प्रयास का फल यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ| निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व में रुचि रखने वालों को उनके ये स्वगत पर्याप्त रुचिकर लगेंगे और जिन्होंने उन्हें सुना होगा उनके परिचित भी प्रतीत होंगे| निराला के साथ-साथ कागज कलम लेकर चलने और उनके कहे अधकहे को नोट करते जाने की चेष्टा मैंने कभी नहीं की, क्योंकि उसमें अपनी खैरियत मनाने की भी स्थिति आ सकती थी| कमला भाई ने कभी कुछ नोट किया था, शिवगोपाल आदि उनके पास अधिक बैठने वालों में से किसी ने कुछ नोट किया यह भी मुझे ज्ञात नहीं है| जो पंक्तियाँ नीचे उद्धृत कर रहा हूँ, वे मेरी कविता की उस कापी में लिखी गयी हैं, जिसे मैंने 1949-50 तक इस्तेमाल किया| तारीख 19-7 दी हुई है| आगे के पृष्ठों पर कई जगह तारीख के साथ सन 49 भी लिखा है, अतः मैं अनुमान लगाता हूँ कि पहला स्वगत मैंने 19-7-49 को नोट किया होगा और दूसरा उसी के कुछ दिनों बाद | उसमें तिथि अंकित नहीं है, परंतु क्रम से वह परवर्ती ही सिद्ध होता है, सम्भव है, दोनों स्वगत कुछ बाद के हों,क्योंकि उनके साथ कोई वर्ष अंकित न होने से किसी भी तिथि पर आग्रह करना कठिन है|

 (1)

सभी कुछ पालिटिक्स है—पालिटिक्स मैं भी जानता हूँ—हर तरफ आदमी छूटे हुए हैं—कोई भी राज छिपा नहीं है—

 वेद स्वयं प्रमाण हैं, होंगे—वेद के प्रमाण हम हैं, हम |

 हिसाब-किताब अलजेबरा, ट्रिगनामेट्री, अर्थमेटिक में पेमेंट करने वाले अर्थमेटिक ही जानते हैं, बस !

 मेरा चेहरा देखते हो—ये सारे निशान गोलियों के निशान हैं—सैंकड़ों गोलियाँ इसके पार जा चुकी हैं, और तुम्हारे माथे पर जो यह निशान है—यह भी गोली का ही होगा—तुम्हारे भी गोली लगी होगी—मगर अब‌‌‌‌—अब तो गोलियाँ लगेंगी पर निशान भी नहीं पड़ेगा|

 दुनिया गोली गोलों की है—मेरे पास न गोली, न गोला, अपनी तो लेखनी रानी है—जब जी चाहा छेड़ दिया—चलने लगी,गोली गोलों वाली दुनिया से कुछ मतलब नहीं|

 (2)

 ( पूर्व स्थिति—निराला जी के एक परिचित उनको अपने यहाँ निमंत्रित करने गये, क्योंकि उनके यहाँ भगवती-चरण वर्मा आदि कुछ साहित्यिक आ रहे थे | उन्होंने कहा दो तरह से, ‘वह आपके दर्शनों के उत्सुक हैं’, आप देसी आम लाइएगा ? निराला जी उनकी बात सुनकर बोले, बोलते गये......)

 आम हर किस्म का मेरे पास रहता है, खास की बात कीजिए, वे लोग दर्शन करना चाहते हैं, तो यहाँ भी आ सकते हैं|

 और आप जानते हैं, जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ पहरा रहता है, मैं आप के घर कैसे जा सकता हूँ|

 (फिर छत देखकर बोले) जर्रे-जर्रे में मेरे लिए जगह है—क्या आप चाहते हैं कि मैं धर लिया जाऊँ—आपके घर भी वैसा ही होगा| वहाँ जाकर मैं बँध जाऊँगा और मैं बँधकर किसी से बात नहीं करना चाहता—मैं आपकी जगह जाऊँगा—मुझे आपकी सी बात कहनी होगी—मैं क्यों कहूँ ?—एक वक्त था कि मैं आपके यहाँ जाकर खुलकर बैठता था, चाय पीता था, आप मेरे आत्मीय हैं, पर अब जमाना बदल गया है—आदमी घिर गया है—मुझे किसी भी दायरे में रहना पसंद नहीं |

 ( उन साहब से एक बार फिर बोले)

 मैं पहलवान हूँ—बचपन से पहलवानी करता आया हूँ—लखनऊ कलकत्ते के दंगलों में लड़ा हूँ—कितने को ही पछाड़ा है मैंने, पर घर की तरफ से रोक दिया गया—और रोक लगी की चीज गयी |

 (पश्चात्दशा बुलाने वाले सज्जन अब अपना धैर्य और साहस दोनों खो चुके थे, विनम्र भाव से प्रणाम किया,धीरे से खिसक गये)

 निराला के जटिल मनस्तल के नीचे से उभर कर आये इस खनिज पदार्थ में कई वाक्य ऐसे हैं, जो हीरे की कनी की तरह चमकदार और मूल्यवान दिखाई देते हैं| जानकीवल्लभ शात्री द्वारा प्रकाशित निराला के पत्रों, डा.रामविलास शर्मा की लिखी जीवनी तथा ‘आत्महंता आस्था’ और ‘महाप्राण निराला’ जैसे नये-पुराने आलोचना-ग्रंथों से कवि का जो तेजस्वी दृढ़ और विचित्र व्यक्तित्व सामने आता है, न केवल उससे उनकी संगति प्रतीत होती है, वरन् वे उसके समग्र कृतित्व को सूत्रबद्ध करने की शक्ति रखते हैं, यथा—

 मुझे किसी भी दायरे में रहना पसंद नहीं |

 अपनी तो लेखनी रानी है—जब जी चाहा छेड़ दिया—चलने लगी|

 गोले-गोलियों वाले संदर्भ में तुम्हारे माथे पर जो निशान है कहकर जिसकी ओर उनके संकेत किया गया है वह शायद मैं ही हूँ क्योंकि वाकई मेरे माथे पर बायीं ओर छुटपन में लगी चोट का निशान मौजूद है, अतिरिक्त आत्मीयतावश उन्होंने अपनी बात को मर्मस्पर्शी बनाने में उसे भी इस्तेमाल कर लिया| आज के विषाक्त माहौल में जब मैं निहत्थी भीड़ पर लाठी-डंडे बरसते और गोलियाँ चलते देखता हूँ और पाता हूँ कि फिर भी जनता अनुद्वेलित है, बुद्धिजीवी किंकर्त्वयविमूढ़ हैं तथा राजनीतिक दल एक-दूसरे पर दोषारोपण करते नहीं थकते, तो मुझको लगता है कि निराला का कहा सच निकला रहा है—गोलियाँ लगेंगी पर निशान भी नहीं पड़ेगा|

 उन्हें बराबर लगता था कि विद्रोह को कुचलने के लिए सत्ता निरंतर सजग रहती है| निराला की यह चिंता यह आशंका व्यक्तिगत सुरक्षा तक सीमित नहीं कही जा सकती| उसमें देश के स्वातंत्र्य-संघर्ष की पूरी चेतना विद्यमान है|

 मैं उनका यह जीवन कभी नहीं भूलूँगा,जो उन्होंने बीमारी की हालत में भी मार्फिया का इंजेक्शन देकर जबरदस्ती अस्पताल ले जाने वालों के विरुद्ध दोनों हाथों से अपना तख्त कस कर पकड़ते हुए दिखाया था| आखिर सब-के-सब उन्हें खींचतान कर हार ही तो गये थे| उनका वह निर्णय विवेकपूर्ण था या नहीं, मैं इस बहस में नहीं पड़ता| मुझे तो उनकी अदम्य संकल्प-शक्ति और असाधारण दृढ़ता एवं संवेदनशीलता भुलाये नहीं भूलती| ‘मृत्यु लड़ायेगी तुझसे जब पंजा’ वही लिख सकता है, जो अपनी पहलवानी को जीवन के अंत तक, यानी देह के शिथिल हो जाने के बाद भी, मानसिक धरातल पर एक निष्ठा के साथ, बड़े-से-बड़े संदर्भ में सार्थक बनाये रख सका हो|

 साहित्य धारा

 निराला जन्मशती अंक

 (1896—1996)